

प्रश्न 1.

शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर-

शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किए जाने के मुख्यतया दो कारण हैं

- शहनाई बजाने में जिस रीड का प्रयोग किया है वह डुमराँव में ही सोन नदी के किनारे मिलती है। इस रीड के बिना शहनाई बजना मुश्किल है।
- शहनाई की मंगल ध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मस्थली डुमराँव ही है।

2) बिस्मिल्लाह खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर-

बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक इसलिए कहा गया है क्योंकि शहनाई की ध्वनि मंगलदायी मानी जाती है। इसका वादन मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। बिस्मिल्ला खाँ अस्सी बरस से भी अधिक समय तक शहनाई बजाते रहे। उनकी गणना भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक के रूप में की जाती है। उन्होंने शहनाई को भारत ही नहीं विश्व में लोकप्रिय बनाया।

3) सुषिर वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?

उत्तर-

सुषिर वाद्यों से अभिप्राय उन वाद्यों से है जिनमें सूराख होते हैं और जिनमें फेंक मारकर बजाया जाता है। शहनाई, बाँसुरी, श्रृंगी आदि सुषिर वाद्य के अंतर्गत आते हैं। इन सुषिर वाद्यों में शहनाई सबसे सुरीली और कर्ण प्रिय आवाज वाली होती है, इसलिए उसे 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि दी गई।

• प्रश्न 4: "मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।"—इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

• उत्तर: इसका आशय यह है कि बिस्मिल्ला खाँ अत्यंत सच्चे और विनम्र कलाकार थे। वे शोहरत और धन से ऊपर उठकर ईश्वर (खुदा) से केवल एक ही प्रार्थना करते थे कि उनकी शहनाई से निकलने वाले सुर इतने सच्चे और असरदार हों कि सुनने वाले का मन आनंद से भर जाए और उनकी आँखों से भावुकता के आँसू निकल आएँ।

• प्रश्न 5: 'नौबतखाने में इबादत' पाठ से हमें क्या संदेश मिलता है?

• उत्तर:

- संगीत को ही अपनी सच्ची साधना या इबादत (पूजा) मानना।
- जीवन में सादगी और विनम्रता बनाए रखना।
- धार्मिक कट्टरता छोड़कर सभी धर्मों और परंपराओं (जैसे काशी की गंगा-जमुनी संस्कृति और मुहर्रम की मजलिस) का आदर करना।
- निरंतर अभ्यास और अपनी कला के प्रति समर्पित

6) ' फटा सुर न बख्शे। लुंगिया का क्या है , आज फटी है , तो कल सी जाएगी। '

उत्तर - बिस्मिल्ला खाँ को दुनिया उनकी शहनाई के कारण जानती है , लुंगी के कारण नहीं। वे खुदा से हमेशा सुरों का वरदान माँगते रहे हैं। उन्हें लगता है कि अभी वे सुरों को बरतने के मामले में पूर्ण नहीं हो पाए हैं। यदि खुदा ने उन्हें ऐसा सुर और कला न दी होती तो वे प्रसिद्ध न हो पाते। उनके मुताबिक फटे सुर को ठीक करना असंभव है पर फटे कपड़े आज नहीं तो कल सिल ही जाएंगे।

7 - काशी में हो रहे कौन - से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे ?

उत्तर - समय के साथ - साथ काशी में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं जो बिस्मिल्ला खाँ को दुखी करते हैं , जैसे -
भाषा सीखें

- पक्का महाल से मलाई बरफ वाले गायब हो रहे हैं।
- कुलसुम की कचौड़ियाँ और जलेबियाँ अब नहीं मिलती हैं।
- संगीत और साहित्य के प्रति लोगों में वैसा मान - सम्मान नहीं रहा।
- गायकों के मन में संगतकारों के प्रति सम्मान भाव नहीं रहा।
- हिंदू - मुसलमानों में सांप्रदायिक सद्भाव में कमी आ गई है।

प्रश्न 8 - पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि

(क) बिस्मिल्ला खाँ मिली - जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

उत्तर - बिस्मिल्ला खाँ अपने धर्म अर्थात् मुस्लिम धर्म के प्रति समर्पित इंसान थे। वे नमाज़ पढ़ते , सिजदा करते और खुदा से सच्चे सुर की नेमत माँगते थे। इसके अलावा वे हज़रत इमाम हुसैन की शहादत पर दस दिनों तक शोक प्रकट करते थे तथा आठ किलोमीटर पैदल चलते हुए रोते हुए नौहा बजाया करते थे। इसी तरह वे काशी में रहते हुए गंगामैया , बालाजी और बाबा विश्वनाथ के प्रति असीम आस्था रखते थे। वे हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित शास्त्रीय गायन में भी उपस्थित रहते थे। इन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली - जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे।

उत्तर - बिस्मिल्ला खाँ हिंदू - मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। उन्हें धार्मिक कट्टरता छू भी न गई थी। वे खुदा और हज़रत इमाम हुसैन के प्रति जैसी आस्था एवं श्रद्धा रखते थे। वैसी ही श्रद्धा एवं आस्था गंगामैया ,

बालाजी , बाबा विश्वनाथ के प्रति भी रखते थे। वे काशी की गंगा - जमुनी संस्कृति में विश्वास रखते थे। इन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ सच्चे इंसान थे।